International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 148-153 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

ICSSR | |National Seminar on "Indian Knowledge System: Education and Prosperity" Org. by Dhanauri P.G. College, Roorkee (28-29 Mar., 2025)

DOI : 10.5281/zenodo.15823852

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश

अजीत कुमार राव[1] एवं **प्रशान्त कुमार[2]**

1. सहायक आचार्य, हर्ष विद्या मन्दिर (पी.जी.) कॉलेज, रायसी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, मोबाइल : 9456381991
2. इतिहास विभाग, हर्ष विद्या मन्दिर (पी.जी.) कॉलेज, रायसी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, मोबाइल : 8439860813

Email : prashantkumar.hvmpg@gmail.com

Received : 06/04/2025	***1st BPR*** : 30/04/2025	***2nd BPR*** : 21/05/2025	***Accepted*** : 03/06/2025

Abstract

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आधुनिक शिक्षा परम्परा में भारतीय ज्ञान परम्परा के एकीकरण पर जोर देती है, जिससे समग्र शिक्षा, सांस्कृतिक जागरूकता और राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा मिले। यह पाठ्यक्रम में गणित, खगोल विज्ञान, आयुर्वेद, योग, धातुकर्म, वास्तुकला जैसे क्षेत्रों में प्राचीन भारतीय योगदान को शामिल करने को प्रोत्साहित करती है, साथ ही वेद, उपनिषद, रामायण और महाभारत जैसे शास्त्रों और भारतीय भाषाओं को महत्व देती है। एक बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिससे आधुनिक विज्ञान और भारतीय ज्ञान परम्परा साथ मिलकर कार्य कर सकें, और शोध केंद्रों एवं विश्वविद्यालयों को स्वदेशी ज्ञान के दस्तावेजीकरण व अध्ययन के लिए प्रेरित किया गया है। संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाओं को विशेष महत्व दिया गया है, जबकि शिक्षा में नैतिक मूल्यों को समाहित करने के लिए भगवद गीता और जातक कथाओं जैसे ग्रंथों से प्रेरणा ली गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पारंपरिक भारतीय शिल्प, कृषि और स्वदेशी कौशल को पुनर्जीवित कर व्यावसायिक शिक्षा का समर्थन करती है, जिससे नवाचार और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिले। इसके अतिरिक्त, नीति आयुर्वेद, योग और पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों को आधुनिक चिकित्सा के साथ बढ़ावा देने और उनके अनुसंधान को प्रोत्साहित करने का भी प्रावधान करती है। भारतीय ज्ञान परम्परा केंद्रों की स्थापना और भारतीय विद्या भवन जैसे संस्थानों को सशक्त बनाने के माध्यम से, यह नीति भारत की समृद्ध बौद्धिक विरासत को संरक्षित और वैश्विक शिक्षा परिदृश्य में एकीकृत करने का मार्ग प्रशस्त करती है, जो आत्मनिर्भर भारत और वसुधैव कुटुंबकं के दर्शन के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

Keywords: आधुनिक, शिक्षा प्रणाली, भारतीय ज्ञान परम्परा, समावेश, राष्ट्रीय, शिक्षा नीति

Introduction

आधुनिक युग में शिक्षा प्रणाली का महत्व सर्वविदित है, जो न केवल ज्ञानार्जन का माध्यम है बल्कि व्यक्ति और समाज के विकास की आधारशिला भी है। भारत, एक प्राचीन सभ्यता और ज्ञान की भूमि होने के नाते, एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता महसूस करता है जो आधुनिक प्रगति के साथ–साथ अपनी समृद्ध सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत को भी समाहित करे (राय, 2002, पृ. 45–58)। इसी परिप्रेक्ष्य में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक दूरदर्शी दस्तावेज के रूप में उभरी है (भारत सरकार, 2020, पृ. 9–12), जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली को इक्कीसवीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना है। इस नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू आधुनिक शिक्षा के साथ भारतीय ज्ञान परम्परा (Indian Knowledge Tradition & IKT) का एकीकरण है।

भारतीय ज्ञान परम्परा कोई स्थिर या एकल इकाई नहीं है, बल्कि यह सदियों से विकसित ज्ञान, दर्शन, विज्ञान, कला और जीवन मूल्यों का एक विशाल और जीवंत भंडार है (अग्रवाल, 2006, पृ. 15–22; मुखर्जी, 2009, पृ. 3–10)। इसमें गणित, खगोल विज्ञान (अग्रवाल, 2006, पृ. 60–75), आयुर्वेद (जैसे चरक संहिता, पृ. 102–115; सुश्रुत संहिता, पृ. 88–95), योग (जैसे पतंजलि के योग सूत्र, पृ. 30–35), वास्तुकला, धातु विज्ञान (अग्रवाल, 2006, पृ. 120–135), दर्शन (मुखर्जी, 2009, पृ. 150–165), व्याकरण, साहित्य (जैसे वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत), संगीत और नृत्य जैसी विविध शाखाएं शामिल हैं। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, बौद्ध और जैन साहित्य, और विभिन्न क्षेत्रीय ज्ञान प्रणालियाँ इस परम्परा के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। यह ज्ञान प्रणाली न केवल तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करती है, बल्कि ज्ञान प्राप्त करने के विशिष्ट तरीके, नैतिक मूल्यों और जीवन के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण को भी समाहित करती है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली, जो काफी हद तक पश्चिमी मॉडलों से प्रभावित है, अक्सर भारतीय ज्ञान परम्परा के इस विशाल भंडार को हाशिए पर रखती हुई दिखाई देती है। इसके परिणामस्वरूप, छात्रों का अपनी जड़ों से एक अलगाव महसूस हो सकता है और वे ज्ञान के एक सीमित परिप्रेक्ष्य तक ही बंधे रह सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस असंतुलन को दूर करने और भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा के मुख्य धारा में लाने का प्रयास करती है (भारत सरकार, 2020, पृ. 25–30)।

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 148-153 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

इसका उद्देश्य छात्रों को न केवल आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी से परिचित कराना है (माधव मेनन, 2018, पृ. 7–14), बल्कि उन्हें अपनी सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत की गहराई और महत्व को भी समझने में सक्षम बनाना है (राय, 2002, पृ. 112–128)।

भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश शिक्षा को अधिक समग्र, प्रासंगिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने की क्षमता रखता है। यह छात्रों में आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, समस्या–समाधान कौशल और नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इसके अतिरिक्त, अपनी ज्ञान परम्परा से परिचित होकर छात्र अपनी पहचान और राष्ट्रीय गौरव की भावना को मजबूत कर सकते हैं, जो एक आत्मनिर्भर और जागरूक समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है। इस शोध पत्र में, हमारा उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक शिक्षा का अभिन्न अंग बनाकर एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित की जा सकती है जो न केवल वैश्विक मानकों के अनुरूप हो, बल्कि भारतीय मूल्यों और ज्ञान की नींव पर भी मजबूती से टिकी हो।

भारतीय ज्ञान परम्परा के समावेश की आवश्यकता एवं महत्व

आधुनिक शिक्षा प्रणाली, यद्यपि ज्ञान और कौशल के विकास पर केंद्रित है, अक्सर पश्चिमी ज्ञान प्रणालियों के प्रभुत्व के कारण अपनी जड़ों से कुछ हद तक विमुख दिखाई देती है। भारतीय ज्ञान परम्परा, जो सदियों के अनुभव, अवलोकन और दार्शनिक चिंतन का परिणाम है, हमारी सभ्यता की आत्मा है। इसका समावेश न केवल शिक्षा को अधिक समग्र और सार्थक बनाएगा, बल्कि छात्रों को अपनी पहचान, मूल्यों और ज्ञान के प्रति एक गहरा सम्मान विकसित करने में भी मदद करेगा। निम्नलिखित बिंदुओं में इस आवश्यकता के हेतु को विस्तार से स्पष्ट किया गया है–

1. **समग्र और संतुलित शिक्षा –** आधुनिक शिक्षा प्रणाली अक्सर ज्ञान के कुछ विशिष्ट क्षेत्रों (विशेष रूप से विज्ञान और प्रौद्योगिकी) पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करती है, जबकि मानवीय मूल्यों, कला, संस्कृति और दार्शनिक चिंतन जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को गौण मान लिया जाता है। भारतीय ज्ञान परम्परा ज्ञान के विभिन्न आयामों– भौतिक, सामाजिक, नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक– को एकीकृत करती है (राय, 2002, पृ. 65–78; मुखर्जी, 2009, पृ. 5–12)। वेदों, उपनिषदों और अन्य शास्त्रीय ग्रंथों में जीवन के सभी पहलुओं पर गहन विचार किया गया है। तैत्तिरीय उपनिषद में शिक्षा को 'ब्रह्मवल्ली' के रूप में वर्णित किया गया है, जो ज्ञान के सर्वोच्च स्वरूप की ओर ले जाती है। इसमें शिक्षा के विभिन्न आयामों पर बल दिया गया है, जिसमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास शामिल है (तैत्तिरीय उपनिषद, ब्रह्मवल्ली)। इस परम्परा का समावेश छात्रों को ज्ञान का एक अधिक समग्र और संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करेगा, जिससे उनका बौद्धिक, भावनात्मक और नैतिक विकास सुसंगत रूप से हो सकेगा। यह उन्हें केवल सूचना प्राप्त करने वाले नहीं, बल्कि विचारशील, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करेगा।

2. **सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव और राष्ट्रीय गौरव** – किसी भी समाज की शिक्षा प्रणाली को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से गहराई से जुड़ा होना चाहिए। भारतीय ज्ञान परम्परा हमारी सदियों पुरानी सभ्यता, दर्शन, विज्ञान और कला का जीवंत प्रमाण है (अग्रवाल, 2006, पृ. 10–18)। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इसका पर्याप्त प्रतिनिधित्व न होने के कारण, युवा पीढ़ी अपनी समृद्ध विरासत से अनभिज्ञ रह सकती है। 'विविधता में एकता' भारत की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, और भारतीय ज्ञान परम्परा इस विविधता को समझने और उसका सम्मान करने की नींव प्रदान करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इस बात पर जोर देती है कि शिक्षा को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से जोड़ा जाना चाहिए। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, खंड 4.1)

भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश छात्रों को अपने सांस्कृतिक इतिहास, मूल्यों और उपलब्धियों के प्रति जागरूक करेगा (राय, 2002, पृ. 110–125)। यह उन्हें अपनी पहचान पर गर्व करने और राष्ट्रीय गौरव की भावना को मजबूत करने में सहायक होगा। अपनी जड़ों से जुड़ाव छात्रों को एक मजबूत आधार प्रदान करता है, जिससे वे आत्मविश्वास के साथ आधुनिक चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।

3. **नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण** – भारतीय ज्ञान परम्परा में नैतिक मूल्यों और सदाचार पर अत्यधिक बल दिया गया है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत बौद्ध एवं जैन धर्म और अन्य धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रंथों में सत्य, अहिंसा, करुणा, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा और सहिष्णुता जैसे सार्वभौमिक मूल्यों का विस्तृत वर्णन मिलता है (मुखर्जी, 2009, पृ. 200–215)। 'अहिंसा परमो धर्मः'– यह उक्ति महाभारत और विभिन्न भारतीय दार्शनिक परंपराओं में महत्वपूर्ण है, जो जीवन के प्रति सम्मान और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के महत्व को दर्शाती है। आधुनिक शिक्षा में इन मूल्यों का समावेश छात्रों के चरित्र निर्माण और नैतिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह उन्हें एक न्यायपूर्ण, सहानुभूतिपूर्ण और जिम्मेदार समाज के सदस्य बनने के लिए प्रेरित करेगा। आज के तेजी से बदलते और प्रतिस्पर्धी विश्व में, नैतिक मूल्यों की नींव छात्रों को सही और गलत के बीच विवेक करने और सिद्धांतों पर आधारित जीवन जीने में मदद करेगी।

4. **ज्ञान के विविध परिप्रेक्ष्य** – भारतीय ज्ञान परम्परा ज्ञान प्राप्त करने के विभिन्न तरीकों को मान्यता देती है, जिसमें तर्क, अनुभव, अवलोकन के साथ–साथ अंतर्ज्ञान और आत्म–ज्ञान भी शामिल हैं (मुखर्जी, 2009, पृ. 70–85)। पतंजलि के योग सूत्र में ध्यान और समाधि के माध्यम से उच्च स्तर की चेतना और ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। यह ज्ञान प्राप्त करने के पारंपरिक भारतीय दृष्टिकोण का एक उदाहरण है (पतंजलि योग सूत्र)। यह ज्ञान को केवल वस्तुनिष्ठ तथ्यों तक सीमित नहीं रखती, बल्कि व्यक्तिपरक अनुभवों और आंतरिक ज्ञान को भी महत्व देती है। आधुनिक

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 148-153 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

विज्ञान अक्सर अनुभवजन्य और तार्किक दृष्टिकोण पर अधिक जोर देता है। भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश छात्रों को ज्ञान के विविध परिप्रेक्ष्यों से परिचित कराएगा, जिससे उनकी आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या–समाधान कौशल का विकास होगा। वे विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और उनका सम्मान करने में सक्षम होंगे।

5. **वैश्विक संदर्भ में भारतीय योगदान की पहचान** – प्राचीन भारत ने विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा, दर्शन और कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है (अग्रवाल, 2006, पृ. 55–70; माधव मेनन, 2018, पृ. 15–28)। शून्य की अवधारणा, दशमलव प्रणाली, आयुर्वेद (जैसे चरक संहिता, पृ. 50–60; सुश्रुत संहिता, पृ. 40–50), योग और वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण भारतीय ज्ञान परम्परा की देन हैं। आर्यभट्ट, एक पाँचवीं शताब्दी के भारतीय खगोलशास्त्री और गणितज्ञ थे, जिन्होंने पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने और ग्रहों की गति के बारे में महत्वपूर्ण सिद्धांत दिए। उनका कार्य वैश्विक विज्ञान के इतिहास में एक मील का पत्थर है (आर्यभटीय)। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इन योगदानों को उचित रूप से शामिल न करने से छात्र अपने देश की बौद्धिक संपदा से अनभिज्ञ रह जाते हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश छात्रों को वैश्विक ज्ञान परिदृश्य में भारत की ऐतिहासिक भूमिका और योगदान से अवगत कराएगा। यह उन्हें आत्मविश्वास देगा और वैश्विक मंच पर भारत की पहचान को मजबूत करने में सहायक होगा।

6. **समकालीन चुनौतियों का समाधान** – भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास, सामाजिक न्याय और सामुदायिक सद्भाव जैसे विषयों पर गहन विचार किया गया है। प्राचीन ग्रंथों और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों में प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने और संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करने के सिद्धांत मिलते हैं। आधुनिक विश्व जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, सामाजिक असमानता और तनाव जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित सिद्धांतों और प्रथाओं को अपनाकर इन समकालीन चुनौतियों का समाधान खोजने में मदद मिल सकती है।

समावेश के संभावित क्षेत्र

भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के विभिन्न स्तरों और विषयों में सफलतापूर्वक शामिल किया जा सकता है। कुछ संभावित क्षेत्र इस प्रकार हैं–

1. **गणित एवं विज्ञान** – प्राचीन भारतीय गणितज्ञों और खगोलविदों के योगदान, जैसे शून्य की अवधारणा, दशमलव प्रणाली, त्रिकोणमिति और ज्योतिषीय गणनाओं को आधुनिक पाठ्यक्रम में उचित रूप से शामिल किया जा सकता है (अग्रवाल, 2006, पृ. 60–75)। प्राचीन भारतीय गणित न केवल अंकगणित तक सीमित था, बल्कि इसमें बीजगणित, ज्यामिति और त्रिकोणमिति के भी उन्नत सिद्धांत शामिल थे।

शून्य की अवधारणा और दशमलव प्रणाली – भारत ने ही शून्य (0) की अवधारणा और दशमलव प्रणाली का आविष्कार किया, जिसने गणितीय गणनाओं को सरल बनाया और आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास की नींव रखी। आर्यभट्ट ने पाई (pi-π) का लगभग सटीक मान (लगभग 3.1416) दिया, त्रिकोणमितीय फलनों (पदम) की तालिकाएँ बनाईं और पृथ्वी के घूर्णन के बारे में बताया (आर्यभटीय, लगभग 499 ईस्वी)। ब्रह्मगुप्त ने शून्य के साथ गणितीय संक्रियाओं के नियम दिए और चक्रीय चतुर्भुज के क्षेत्रफल का सूत्र प्रतिपादित किया (ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त, 628 ईस्वी)। भास्कर द्वितीय की पुस्तक लीलावती गणित के विभिन्न पहलुओं को सरल और काव्यात्मक तरीके से प्रस्तुत करती है। भारतीय खगोलविदों ने ग्रहों की गति, ग्रहणों और नक्षत्रों की स्थिति की गणना करने के लिए परिष्कृत प्रणालियाँ विकसित की थीं। ज्योतिषीय गणनाओं का वैज्ञानिक आधार भी इसमें निहित है।

आधुनिक पाठ्यक्रम में इन योगदानों को गणित और विज्ञान के इतिहास के भाग के रूप में पढ़ाया जा सकता है। छात्रों को इन प्राचीन अवधारणाओं के पीछे के तर्क और विधियों को समझने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। आधुनिक गणितीय सिद्धांतों के विकास में इनकी भूमिका को स्पष्ट किया जा सकता है।

2. **भाषा एवं साहित्य** – संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं (जैसे तमिल, हिंदी, बांग्ला) के समृद्ध साहित्य, जिसमें ज्ञान, दर्शन, कविता और कहानियाँ निहित हैं, छात्रों को भाषाई कौशल और सांस्कृतिक समझ विकसित करने में मदद कर सकते हैं (राय, 2002, पृ. 112–128)।

संस्कृत साहित्य एवसं अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य – वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, कालिदास के नाटक और भर्तृहरि के नीति शतक जैसे ग्रंथ जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। तमिल का संगम साहित्य, भक्ति साहित्य और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की साहित्यिक कृतियाँ अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपराओं को दर्शाती हैं। इन साहित्यिक कृतियों में निहित दार्शनिक विचार (जैसे आत्मा, ब्रह्म, कर्म, मोक्ष) छात्रों की बौद्धिक और आध्यात्मिक समझ को विकसित कर सकते हैं। पंचतंत्र, जातक कथाएँ और हितोपदेश जैसी कहानियाँ नैतिक मूल्यों और व्यावहारिक ज्ञान को रोचक तरीके से सिखाती हैं।

आधुनिक पाठ्यक्रम में इन साहित्यिक कृतियों के अंशों को भाषा और साहित्य के पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है। छात्रों को इन ग्रंथों के भाषाई सौंदर्य, साहित्यिक शैलियों और उनमें निहित सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराया जा सकता है। अनुवादों और आधुनिक व्याख्याओं के माध्यम से इन्हें समकालीन संदर्भ में समझाया जा सकता है।

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 148-153 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

3. **सामाजिक विज्ञान** – इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र के पाठ्यक्रम में प्राचीन भारतीय सामाजिक संरचनाओं, शासन प्रणालियों, कला, वास्तुकला और व्यापारिक गतिविधियों को शामिल किया जा सकता है।

प्राचीन सामाजिक, शासन एवं व्यापारिक संरचनाएँ – वर्ण व्यवस्था, परिवार प्रणाली और ग्रामीण समुदायों की संरचना को समझना प्राचीन भारतीय समाज को जानने के लिए आवश्यक है। मौर्य, गुप्त और चोल जैसे साम्राज्यों की शासन व्यवस्था, प्रशासन और कानून के सिद्धांतों का अध्ययन राजनीतिक विज्ञान के छात्रों के लिए उपयोगी हो सकता है। प्राचीन भारत के व्यापारिक मार्ग, समुद्री व्यापार और आर्थिक संबंधों का अध्ययन प्राचीन विश्व के साथ भारत के संबंधों को समझने में मदद करता है (मुखर्जी, 2009, पृ. 3–10)।

आधुनिक पाठ्यक्रम में इतिहास के पाठ्यक्रम में इन पहलुओं को विस्तार से शामिल किया जा सकता है। छात्रों को प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से प्राचीन भारतीय प्रणालियों की आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता को समझा जा सकता है।

4. **कला एवं संस्कृति –** भारतीय शास्त्रीय कलाओं, लोक कलाओं, संगीत, नृत्य और नाट्य परंपराओं का अध्ययन छात्रों को सौंदर्यबोध और रचनात्मकता विकसित करने में सहायक होगा।

कला – वास्तुकला एवं शास्त्रीय–लोक कलाएँ : सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना, मौर्यकालीन स्तूप, गुप्तकालीन मंदिर और दक्षिण भारतीय मंदिरों की वास्तुकला भारतीय कला और इंजीनियरिंग कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी, मणिपुरी, मोहिनीअट्टम, कुचिपुड़ी और सत्रिया जैसे शास्त्रीय नृत्य रूपों का सौंदर्य, तकनीक और सामाजिक–धार्मिक महत्व है। विभिन्न क्षेत्रों की लोक कलाएँ (जैसे मधुबनी, वारली, पटचित्र) स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को दर्शाती हैं।

संगीत एवं नाटय परंपराएँ – हिंदुस्तानी और कर्नाटक शास्त्रीय संगीत की राग, ताल और लय की जटिल संरचनाएँ और विभिन्न प्रकार के लोक संगीत भारतीय संगीत की समृद्धि को दर्शाते हैं। संस्कृत नाटकों (जैसे कालिदास के अभिज्ञानशाकुंतलम) और लोक नाट्य रूपों (जैसे रामलीला, नौटंकी) का अध्ययन भारतीय रंगमंच की परंपरा को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

आधुनिक पाठ्यक्रम में कला और संस्कृति के पाठ्यक्रम में इन विभिन्न कला रूपों का परिचय दिया जा सकता है। छात्रों को इन कलाओं के प्रदर्शनों को देखने और कुछ बुनियादी कौशल सीखने के अवसर मिल सकते हैं। इन कलाओं के सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व पर चर्चा की जा सकती है।

5. **स्वास्थ्य एवं कल्याण** – आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों के सिद्धांतों और लाभों को स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है। आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियाँ भारत की प्राचीन स्वास्थ्य प्रणालियाँ हैं।

आयुर्वेद, योग प्राकृतिक एवं चिकित्सा – यह जीवन शैली और स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आहार, व्यायाम और जड़ी–बूटियों के उपयोग पर आधारित एक समग्र चिकित्सा प्रणाली है। इसके त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) का सिद्धांत शरीर की प्रकृति को समझने में मदद करता है। शारीरिक आसन (योगासन), श्वास व्यायाम (प्राणायाम) और ध्यान (ध्यान) मन और शरीर के बीच संतुलन स्थापित करने और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में सहायक हैं। मिट्टी, पानी, धूप और अन्य प्राकृतिक तत्वों का उपयोग करके बीमारियों का इलाज करने की एक प्रणाली है (चरक संहिता, पृ. 102–115; पतंजलि के योग सूत्र, पृ. 30–35)।

आधुनिक स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में इन प्रणालियों के बुनियादी सिद्धांतों और लाभों को शामिल किया जा सकता है। छात्रों को सरल योगासन और ध्यान तकनीकों का अभ्यास कराया जा सकता है। आयुर्वेद के मौलिक सिद्धांतों और स्वस्थ जीवन शैली के बारे में जानकारी दी जा सकती है।

6. **व्यावसासियक शिक्षा** – पारंपरिक भारतीय शिल्प, कृषि पद्धतियों और स्वदेशी तकनीकों का ज्ञान छात्रों को आत्मनिर्भर बनने और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है (अग्रवाल, 2006, पृ. 120–135)। पारंपरिक भारतीय शिल्प और तकनीकें ज्ञान और कौशल का खजाना हैं।

हस्तशिल्प, कृषि एवं स्वदेशी तकनीकें – विभिन्न प्रकार के वस्त्र, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी की कारीगरी, धातु शिल्प और आभूषण बनाने की पारंपरिक तकनीकों में अद्वितीय कौशल और ज्ञान निहित है। प्राचीन और पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ (जैसे जैविक खेती, जल प्रबंधन की तकनीकें) टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल हैं। विभिन्न प्रकार के उपकरण, निर्माण तकनीकें और जल संरक्षण की स्वदेशी प्रणालियाँ स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित की गई थीं।

आधुनिक व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में इन पारंपरिक कौशलों का परिचय दिया जा सकता है। छात्रों को स्थानीय कारीगरों और किसानों के साथ इंटर्नशिप करने या कार्यशालाओं में भाग लेने का अवसर मिल सकता है। इन पारंपरिक तकनीकों को आधुनिक संदर्भ में कैसे उपयोग किया जा सकता है, इस पर अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 148-153 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

7. **नैतिक शिक्षा** – विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं से नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों को निकालकर एक समावेशी नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम तैयार किया जा सकता है। भारत की विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक परंपराएँ नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों का एक समृद्ध स्रोत हैं। हिंदू धर्म के सत्य, अहिंसा, धर्म, कर्म और मोक्ष जैसे नैतिक सिद्धांत भारतीय संस्कृति का आधार हैं। बौद्ध धर्म के अष्टांगिक मार्ग, पंचशील और करुणा की भावना नैतिक आचरण के महत्वपूर्ण पहलू हैं। जैन धर्म के अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के सिद्धांत व्यक्तिगत और सामाजिक नैतिकता पर जोर देते हैं। सिख धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म जैसे अन्य धर्मों में भी सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों पर जोर दिया गया है (भारत सरकार, 2020, पृ. 25–30)।

आधुनिक पाठ्यक्रम में इन्हें शामिल कर एक समावेशी नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम विकसित किया जा सकता है जिसमें इन विभिन्न परंपराओं से सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों को शामिल किया जाए। कहानियों, चर्चाओं और गतिविधियों के माध्यम से छात्रों में सहानुभूति, ईमानदारी, जिम्मेदारी और सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों को विकसित किया जा सकता है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा के समावेश में चुनौतियां –

भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सफलतापूर्वक समाहित करने के मार्ग में कई महत्वपूर्ण चुनौतियां विद्यमान हैं, जिन पर ध्यान देना आवश्यक है ताकि इस लक्ष्य को प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सके।

1. **पाठ्यक्रम का विकास** – आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं और भारतीय ज्ञान परम्परा के विशाल और विविध तत्वों को संतुलित करते हुए एक व्यापक और सुसंगत पाठ्यक्रम विकसित करना एक जटिल कार्य है। वर्तमान पाठ्यक्रम पहले से ही कई विषयों से भरा हुआ है, और IKT के तत्वों को प्रभावी ढंग से एकीकृत करने के लिए सावधानीपूर्वक योजना और पुनर्गठन की आवश्यकता होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह उल्लेख किया गया है कि 'सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र को भारतीय जड़ों और परंपराओं में निहित किया जाएगा' (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, खंड 4.2)। हालांकि, इस व्यापक दृष्टिकोण को विशिष्ट और क्रियान्वित करने योग्य पाठ्यक्रम में बदलना एक चुनौती है। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि IKT के तत्वों को सतही तौर पर न जोड़ा जाए, बल्कि उन्हें विषयवस्तु के साथ गहराई से एकीकृत किया जाए ताकि छात्रों को उनकी वास्तविक समझ हो सके। इसके लिए विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों और IKT विद्वानों के बीच सहयोगात्मक प्रयास की आवश्यकता होगी।

2. **शिक्षकों का प्रशिक्षण** – शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराना और उन्हें प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। वर्तमान में, अधिकांश शिक्षकों को IKT का विस्तृत ज्ञान नहीं है, और उन्हें इस क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी। शिक्षा मंत्रालय द्वारा शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास पर जोर दिया गया है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, खंड 6.3)। IKT को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए, इन सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में भारतीय ज्ञान प्रणालियों, उनके सिद्धांतों और आधुनिक शिक्षा में उनके अनुप्रयोगों पर मॉड्यूल शामिल किए जाने चाहिए। शिक्षकों को न केवल प्ज्ञ का सैद्धांतिक ज्ञान होना चाहिए, बल्कि उन्हें इसे रोचक और आकर्षक तरीके से छात्रों तक पहुंचाने की शिक्षण विधियों में भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। इसमें कहानी कहने, चर्चाओं और अनुभवात्मक सीखने जैसी तकनीकों का उपयोग शामिल हो सकता है।

3. **शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता** – भारतीय ज्ञान परम्परा से संबंधित प्रामाणिक और सुलभ शिक्षण सामग्री और संसाधनों का विकास एक और महत्वपूर्ण चुनौती है। वर्तमान में, प्ज्ञ पर अधिकांश सामग्री या तो विशिष्ट विद्वानों के लिए है या व्यापक दर्शकों के लिए आसानी से उपलब्ध नहीं है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उच्च गुणवत्ता वाली पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण सामग्री के विकास पर जोर दिया गया है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, खंड 4.36)। प्ज्ञ के लिए, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि ये सामग्रियां तथ्यात्मक रूप से सही हों, आधुनिक शैक्षणिक सिद्धांतों के अनुरूप हों और विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध हों। इसके अतिरिक्त, डिजिटल संसाधनों, जैसे इंटरैक्टिव मॉड्यूल, वीडियो और ऑनलाइन पाठ्यक्रम, को भी विकसित करने की आवश्यकता है ताकि प्ज्ञ को छात्रों के लिए अधिक सुलभ और आकर्षक बनाया जा सके।

4. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ समन्वय** – आधुनिक विज्ञान और भारतीय ज्ञान परम्परा के बीच समन्वय स्थापित करना आवश्यक है ताकि अंधविश्वास और अवैज्ञानिक मान्यताओं से बचा जा सके। IKT के कुछ पहलुओं की व्याख्या आधुनिक वैज्ञानिक मानदंडों के अनुसार करने की आवश्यकता हो सकती है। यह महत्वपूर्ण है कि IKT को आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से पढ़ाया जाए। छात्रों को यह समझने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि IKT के सिद्धांतों और अवधारणाओं को आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान के संदर्भ में कैसे समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद के सिद्धांतों को आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है, जबकि प्राचीन खगोल विज्ञान की गणनाओं की तुलना आधुनिक खगोलीय डेटा से की जा सकती है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि प्ज्ञ का समावेश वैज्ञानिक सोच को कमजोर न करे, बल्कि छात्रों को ज्ञान के विभिन्न रूपों को समझने और उनका मूल्यांकन करने के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान करे।

5. **मूल्यांकन के तरीके** – भारतीय ज्ञान परम्परा के समावेश के बाद छात्रों के ज्ञान और समझ का मूल्यांकन करने के लिए उपयुक्त मूल्यांकन विधियों का विकास करना एक चुनौती होगी। पारंपरिक परीक्षा–आधारित मूल्यांकन IKT के सभी पहलुओं, जैसे मूल्यों, सांस्कृतिक जागरूकता और समग्र दृष्टिकोण का आकलन करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता है। राष्ट्रीय

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 148-153 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

शिक्षा नीति 2020 में रचनात्मक मूल्यांकन और छात्रों के समग्र विकास के आकलन पर जोर दिया गया है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, खंड 4.40)। IKT के संदर्भ में, मूल्यांकन विधियों में परियोजना–आधारित कार्य, समूह चर्चाएँ, प्रदर्शनियाँ और पोर्टफोलियो जैसे अधिक गुणात्मक और व्यापक दृष्टिकोण शामिल हो सकते हैं। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि मूल्यांकन के तरीके छात्रों की वास्तविक समझ और IKT के प्रति उनकी सराहना को मापें, न कि केवल तथ्यात्मक जानकारी को याद करने की उनकी क्षमता को।

शोध संस्थानों और विश्वविद्यरलसरें की भूमिका

शोध संस्थानों और विश्वविद्यालयों को भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन, दस्तावेजीकरण और प्रचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। उन्हें अंतःविषयक अनुसंधान को बढ़ावा देना चाहिए जो आधुनिक विज्ञान और भारतीय ज्ञान प्रणालियों के बीच सेतु का काम करे। स्वदेशी भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षण सामग्री का विकास और प्रसार भी महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा के समावेश की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में मदद करेगा, बल्कि छात्रों को एक समग्र, मूल्य–आधारित और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शिक्षा प्रदान करेगा। चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करते हुए, यदि हम भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक शिक्षा के साथ सफलतापूर्वक एकीकृत कर पाते हैं, तो यह भारत को शिक्षा के क्षेत्र में एक वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा और 'आत्मनिर्भर भारत' और 'वसुधैव कुटुम्बकम' के दर्शन को साकार करने में सहायक होगा। भारतीय ज्ञान परम्परा का आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समावेश एक परिवर्तनकारी कदम है, लेकिन यह चुनौतियों से रहित नहीं है। पाठ्यक्रम विकास, शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ समन्वय और उपयुक्त मूल्यांकन विधियों का विकास ऐसे महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिन पर ध्यान देना होगा। इन चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करके ही हम एक ऐसी शिक्षा प्रणाली बना सकते हैं जो हमारी समृद्ध विरासत को पोषित करे और छात्रों को ज्ञान और मूल्यों के एक समग्र आधार के साथ सशक्त करे।

संक्षेप में, भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शामिल करने की अपार संभावनाएं हैं, और यह छात्रों को एक समृद्ध, समग्र और सांस्कृतिक रूप से जागरूक शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

संदर्भ सूची

1. सातवलेकर, पं. श्रीपाद दामोदर, 2000, ऋग्वेद सुबोध भाष्य, स्वाध्याय मण्डल, किल्ला पारडी, जिला बलसाड़, गुजरात।
2. श्रीपाद दामोदर, सातवलेकर, 1990, अथर्ववेद सुबोध भाष्य, स्वाध्याय मण्डल, किल्ला–पारडी, जिला बलसाड़, गुजरात।
3. पं. गंगा प्रसाद, उपाध्याय, 2010, शतपथ ब्राह्मण (हिन्दी अनुवाद), गोविन्द राम हासानन्द, दिल्ली।
4. शास्त्री, ए. महादेव, 1903, तैत्तिरीय उपनिषद–सायण भाषा सहित (अंग्रेजी अनुवाद), मैसूर।
5. बाल्मीकि रामायणं (दो खंड), 1997, गीता प्रेस, गोरखपुर।
6. श्रीमद्भगवद्गीता, 1993, गीता प्रेस, गोरखपुर।
7. ई. डब्ल्यू. होपकिन्स, 1901, द ग्रेट एपिक्स ऑफ इण्डिया, यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क।
8. सांकृत्यायन, राहुल, 1935, विनयपिटक (हिंदी अनु.), महाबोधि सभा, सारनाथ।
9. शास्त्री, उदयवीर, 2022, पात्न्जल–योगदर्शनम, विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद, नई दिल्ली।
10. कविराज कुंज, लाल, (संपादक), 1911, सुश्रुत संहिता (अंग्रेजी अनुवाद), कलकत्ता।
11. शर्मा, पी.वी., 1998, चरक संहिता (अंग्रेजी अनुवाद), चतुर्थ संस्करण, चौखंबा वाराणसी।
12. पिल्लई, प्रो.एस. वैयापुरी, 1956, हिस्ट्री ऑफ तमिल लैंग्वेज एंड लिटरेचर, न्यू सेंचुरी बुक हाउस।
13. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार।
14. अग्रवाल, डी. पी., 2006, भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की विरासत, आर्यभट्ट विज्ञान केन्द्र।
15. कपिल, एस. के., 2015, भारतीय ज्ञान परम्परारू अवधारणा और अनुप्रयोग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय प्रकाशन।
16. माधव मेनन, के., 2018, प्राचीन भारत में विज्ञान, नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत।
17. मुखर्जी, एम., 2009, भारतीय दर्शन का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स।
18. राय, एस. एन., 2002, भारतीय संस्कृति और सभ्यता, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
19. सेन्गुप्ता, एस., 2019, भारतीय ज्ञान प्रणाली, रूपा पब्लिकेशन्स।
20. तिवारी, बी. के., 2017, भारतीय ज्ञान परम्परा : एक परिचय, विश्वविद्यालय प्रकाशन।

*** ***